P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जयपुर के विश्व विरासत सूची स्थलः एक अध्ययन

अदिति शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

अनिल कुमार शर्मा
प्रशासक,
संस्कार भारती पी.जी. महाविद्यालय,
बगरू, जयपुर

सारांश

मनुष्य एवं मानवता के विकास, आगामी पीढ़ी के भविष्य एवं ज्ञानवर्धन के लिए यूनेस्को ने विश्व के ऐसे स्थलों का चयन किया है जो विश्व संस्कृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन स्थलों को विश्व विरासत सूची में शामिल किया जाता है। जयपुर से आमेर का दुर्ग तथा जन्तर–मन्तर इस सूची के अन्तर्गत आते है। दोनों ही स्थल मानव जाति की सभ्यता, संस्कृति, विकासयात्रा तथा उपलब्धियों की कहानी कहते हैं।

मुख्य शब्द : विरासत, धरोहर, यूनेस्को, आमेर, दुर्ग, जन्तर–मन्तर, वेधशाला, शीश महल, विश्व विरासत सूची, सवाई जयसिंह, शिलामाता, कछवाहा, नवदुर्गा।

प्रस्तावना

मानव की विकास यात्रा में विरासत का महत्वपूर्ण स्थान है। विरासत अर्थात् धरोहर या थाती। मानव अपने विकास क्रम में बहुत सी उपलब्धियों और अवशेषों को पीछे छोड़ आगे बढ़ता गया हैं। ये अवशेष अपने आप में सम्पूर्ण इतिहास है और मानव की विकास यात्रा की कहानी कहते हैं। भावी पीढ़ी के हित और ज्ञानवर्धन के लिए इन विरासतों को बचाया जाना जरूरी है। ऐसे महत्वपूर्ण स्थलों के संरक्षण हेतु यूनेस्को द्वारा पहल की गई है। यूनेस्को ने विश्व विरासत स्थल समिति का गठन किया है जो विश्व के महत्वपूर्ण विरासत स्थलों का चयन करती है। यह समिति यूनेस्को के तत्वाधान में इन स्थलों की देखरेख करती है। विश्व विरासत के लिए विश्व के ऐसे स्थलों को चयनित एवं संरक्षित करना होता है जो विश्व संस्कृति की दृष्टि से मानवता के लिए महत्वपूर्ण है। इन स्थलों के चयन के लिए कुछ मानदण्ड निर्धारित किये गये हैं जिन्हें पूरा करने पर ही नामांकित स्थल को विश्व विरासत सूची में शामिल किया जाता है।

यूनेस्को ने भारत के 37 स्थलों को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया हैं। इसमें से राजस्थान के 3 स्थल आते है– 1. केवलादेव (1985) 2. जन्तर–मन्तर (2010) 3. गिरिदुर्ग (2013)। वर्ष 2013 में इस सूची में राजस्थान के 6 दुर्गों का चयन किया गया है। विश्व विरासत सूची में गुलाबी नगर जयपुर के दो स्थल शामिल है–प्रथम''आमेर दुर्ग'' तथा द्वितीय ''जन्तर मन्तर''। आमेर दुर्ग को सांस्कृतिक विरासत सूची स्थल में तथा जन्तर–मन्तर को संग्रहालयों द्वारा संरक्षित विरासत सूची में क्रमषः 2013 तथा 2010 में शामिल किया गया है।वर्तमान में जयपुर की चारदीवारी अथवा पुराने शहर को भी इस सूची में शामिल करवाने के प्रयास किये जा रहे है। प्रस्तुत आलेख में जयपुर के विश्व धरोहर सूची में चयनित दोनों स्थलों के इतिहास एवं स्थापत्य का अध्ययन व अवलोकन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य विश्व विरासत सूची में शामिल जयपुर के स्थलों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करना है। विरासत क्या है? विरासत सूची हेतु किन स्थलों का चयन किया जाता है? आमेर दुर्ग तथा जन्तर–मन्तर का क्या महत्व है?– इन सभी विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास शोधपत्र में किया गया है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधपत्र के लिए विद्वानों द्वारा रचित ग्रन्थों एवं शोध पत्रिकाओं से जानकारी प्राप्त हुई। रमाकान्त पाण्डेय द्वारा अनुदित एवं सम्पादित ईश्वरविलास महाकाव्य, डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर कृत "राजस्थान के प्रमुख दुर्ग'', डॉ. जगदीश सिंह गहलोत की "कछवाहों का इतिहास", मोहनलाल गुप्ता द्वारा लिखित "जयपुर सम्भाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन'' आदि ग्रन्थों से विषय सम्बन्धी सूचना प्राप्त हुई।

आमेर दुर्ग

आमेर का गिरी दुर्ग जयपुर से 11 कि.मी. उत्तर में अरावली पवर्तमाला की कालीखोह पहाड़ी के ढलान पर स्थित है। चारों ओर से पर्वतमालाओं ने इस दुर्ग को नैसर्गिक सुरक्षा प्रदान की है। प्राचीन काल में अम्बिकापुर, अम्बावती या आम्बेर के नाम से प्रसिद्ध इस दुर्ग पर मीणों का अधिकार था। एक मान्यता के अनुसार राजा काकिलदेव ने आमेर नगर की स्थापना की थी।[1] उन्होंने ही इसे जीतकर इसे ढूंढ़ाड प्रदेश की राजधानी बनाया। तब से लेकर जयपुर की स्थापना (1727) तक यह नगर कछवाहों की राजधानी के रूप में विख्यात रहा। आमेर के कछवाहा ही राजस्थान के पहले राजपूत थे जिन्होंने अकबर से मैत्री एवं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। राजा भारमल, भगवन्तदास, मानसिंह, मिर्जाराजा जयसिंह और सवाई जयसिंह आदि कछवाहा शासकों ने मुगल साम्राज्य के उत्कर्ष एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुगल शासकों से मैत्री तथा शासकों की वीरता के कारण ही आमेर प्रायः बाह्य आक्रमणों से मुक्त रहा। किन्तु इतिहास में एक समय ऐसा भी आया कि आमेर को कुछ समय के लिए मुगल बादशाह बहादुरशाह की वक्र दृष्टि का सामना करना पड़ा और उसका नाम बदलकर मोमीनाबाद रख दिया गया। कई जगह यह नाम इस्लामाबाद भी मिलता है।[2] सवाई जयसिंह के चातुर्य और बुद्धिमता से आमेर अपना पुराना स्वरूप प्राप्त कर सका। आमेर का दुर्ग पर्वतीय घाटी में स्थित होने के साथ ही सुदृढ़ परकोटे से भी रक्षित है। राजस्थान के अन्य दुर्गों से यह इस रूप में भिन्न है कि सभी दुर्गों में राजप्रासाद समतल भाग पर बनाये जाते थे वहीं आमेर के राजमहल पर्वतीय ढलान पर इस प्रकार बने है कि ये दुर्ग का ही भाग लगते हैं।[3] आमेर की सुरक्षा के लिए इसके पृष्ठ भाग में जयगढ़ दुर्ग का निर्माण किया गया था। इसके दूसरी ओर नाहरगढ़ का दुर्ग स्थित है। आमेर दुर्ग के नीचे मिर्जा जयसिंह द्वारा निर्मित दिलाराम का बाग है जिसे संग्रहालय का रूप प्रदान कर दिया गया है। इसके समीप स्थित मावठा तालाब वर्षा ऋतु में दुर्ग के सौन्दर्य को द्विगुणित कर देता है।

दुर्ग में प्रवेश करने पर प्रथम द्वार 'जयपोल' है। इसे पार करने पर एक विशाल प्रांगण आता है जिसे ''जलेब चौक'' कहते हैं। हाथी पर आने वाले पर्यटक इस चौक में ही उतरते हैं। किसी अवसर विशेष यथा छठ पूजा तथा नवरात्रि पर यहाँ विशाल जन समूह इकट्ठा हो जाता है। जलेब चौक के पूर्व और पश्चिम में दो मेहराबदार दरवाजे क्रमशः सूरजपोल और चांदपोल कहलाते हैं।

जलेब चौक से लगता हुआ एक प्रवेशद्वार ''सिंहपोल'' कहलाता है जिसके पार्श्व में कछवाहों की कुलदेवी ''शिलामाता का मन्दिर'' है। शिलादेवी के रूप में प्रतिष्ठित अष्टभुजी दुर्गा की मूर्ति को राजा मानसिंह बंगाल से लेकर आये थे। मन्दिर के मुख्यद्वार पर नवदुर्गा (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कत्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री) तथा दस महाविद्या (काली, तारा, शोडषी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला) को उत्कीर्ण किया गया है। शिलामाता की श्याम पाषाण से निर्मित यह मूर्ति महिषासुरमर्दिनी के रूप में मन्दिर में प्रतिष्ठित है।

सिंहपोल से आगे आमेर के राजमहल निर्मित है। यहाँ के महलों का निर्माण मुख्यतः मानसिंह और मिर्जाराजा जयसिंह ने करवाया था। माना जाता है कि राजप्रासाद का निर्माण अठारहवीं सदी में जाकर पूरा हुआ।[4] आमेर दुर्ग के प्रमुख भवन निम्नलिखित प्रकार से हैं–

दीवान–ए–आम

यह संगमरमर से निर्मित चालीस स्तम्भों पर टिका आयताकार भवन है। स्तम्भों के शीर्ष भाग गजमुखाकार है। इसका निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह ने करवाया था। यह राजा का आम दरबार होता था जहाँ बैठकर राजा जनसामान्य से मिलता था और उनकी समस्यायें सुनता था।

गणेश पोल

यह विश्व के भव्य और अलंकृत प्रवेशद्वारों में से एक है जिसमें से होकर दीवाने खास में जाया जाता था। यह द्वार लगभग 50 फुट ऊंचा तथा 50 फुट चौड़ा है। इसके शीर्ष भाग में प्रथम पूज्य भगवान गणेश का चित्र उत्कीर्ण है।

दीवान ए खास

इसे जय मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ राजा अपने अधिकारियों एव सामन्तों के साथ मंत्रणा करता था। राज्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार विमर्श इसी प्रासाद में होता था। दीवान ए खास मे दो विशाल कमरें, दालान, फव्वारें युक्त विशाल आंगन, स्नानागार आदि भवन है। इसका निर्माण मिर्जाराजा जयसिंह ने करवाया था।

शीश महल

शीशमहल आमेर का सर्वाधिक दर्शनीय एवं चर्चित महल है। इसकी छतों और दीवारों पर कांच की बारीक जड़ाई की गई है। इस अंतःमहल में एक जलती हुई मोमबत्ती के प्रकाश से शीषें के टुकडों में व्यक्ति के हजारों प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ते हैं। वर्तमान में निर्माण एवं सुरक्षा कार्य के चलते यह भवन पर्यटकों के लिए बन्द कर दिया गया है।

यश मंदिर

यह भवन दीवान ए खास की छत पर बना हुआ है। संगमरमर की कलात्मक जालियों और अंलकरण के कारण यह महल दर्शनीय है। रानियों के लिए दीवाने खास की गतिविधियों को देखने हेतु धनुषाकार छत पर टिके इस लम्बे भवन का निर्माण करवाया गया था।

सुहाग मंदिर

गणेश पोल के उपर बने इस भवन को सौभाग्य मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। रानियों के मनोरंजन एवं आमोद प्रमोद के लिए इस आयताकार भवन का निर्माण हुआ था। कलात्मक जालियाँ एवं रंगीन पत्थरों से बना झरना महल की सुन्दरता को चार चांद लगा देते है।

सुख मन्दिर

यह कछवाहा राजाओं का ग्रीष्मकालीन निवास है। इसकी दीवार में मेहराबयुक्त चौखट से घिरा

संगमरमर का झरना बना हुआ है। इस चौखट में बने सैकड़ों छद्रों से शीतल पवन भीतर आती है जो मन, मस्तिष्क और शरीर को सुख से भर देती हैं। दरवाजों पर हाथीदांत व चन्दन का अलंकरण इस महल को ओर भी भव्य बना देते हैं।

आमेर मन्दिरों की दृष्टि से भी समृद्ध एवं प्रसिद्ध दुर्ग रहा है। यहाँ स्थित शिलामाता के मन्दिर का उल्लेख पूर्व मे किया जा चुका है। दुर्ग का दूसरा प्रसिद्ध मन्दिर जगत शिरोमणी का है जिसका निर्माण राजा मानसिंह ने अपने पुत्र जगतसिंह की स्मृति में करवाया था। मंदिर में श्याम पाषाण (काले पत्थर) की भगवान कृष्ण की मूर्ति प्रतिष्ठित है। सम्भवतः यह चित्तौड़ से लाई गई वही मूर्ति है जिसकी पूजा मीराबाई किया करती थी।[5] अम्बिकेश्वर महादेव मंदिर भी महत्वपूर्ण है। एक मान्यता के अनुसार इसके नाम पर ही दुर्ग का नाम आम्बेर पडा। सूर्य मंदिर, नरसिंहजी का मंदिर, हरिहर मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि यहाँ के अन्य प्रमुख मंदिर है।

आमेर के अन्य भवनों में राजा मानसिंह के महल, रनिवास, परिचारिकाओं के भवन, दालान, सुरंगें आदि है जो अपने शिल्प और सौन्दर्य के कारण प्रशंसनीय है।

जन्तर–मन्तर

यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल जयपुर का दूसरा स्थल जन्तर मन्तर है जिसे सवाई जयसिंह की वेधशाला भी कहा जाता है। जन्तर का आशय यन्त्र अथवा उपकरणों से हैं तथा मन्तर शब्द रहस्यमय तथ्यों के उपयोग में ली जाने वाली गणितीय सारणी सूत्रों के लिए प्रयुक्त किया गया है। अध्ययवसायी और विद्वान राजा सवाई जयसिंह ज्योतिष और खगोल विद्या में गहरी रूचि रखता था। वह ऐसी शाला स्थापित करने का इच्छुक था जिससे उसे ग्रह, नक्षत्रों, समय और मौसम की जानकारी प्राप्त हो सके। वह अपने समय से आगे की सोच रखने वाला ऐसा दूरदर्शी शासक था जो भविष्य में झांकने को उत्सुक रहता था। अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसने दुनियाभर से इन विषयों की पुस्तकें मंगाकर उनका अध्ययन किया। प्राचीन भारतीय ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान का भी उसने अध्यवसन किया।

सवाई जयसिंह से पूर्व पन्द्रहवीं शताब्दी में उजबेगिस्तान में उलूग बेग नामक राजा हुआ जिसने अपनी राजधानी समरकन्द में एक वेधशाला का निर्माण करवाया था। जयसिंह ने उलूग बेग की ज्योतिष एवं गणितीय तालिकाओं का संस्कृत में अनुवाद करवाया। शीघ्र ही उसे अनुभव हुआ कि उलूग बेग द्वारा स्थापित ज्योतिष लौह यन्त्र सही परिणाम नहीं देते हैं अतः उसने पत्थरों के विशाल यन्त्रों को बनवाने का निश्चय किया।[6]

पं. जगन्नाथ सम्राट और प. केवलराम की सहायता से ज्योतिर्विज्ञान परक सारणियाँ तैयार की गई। वर्षों के श्रम, अध्ययन, चिन्तन एवं तैयार सारणियों के आधार पर 1724 ई. में दिल्ली में भारत की पहली वेधशाला का निर्माण किया गया। तत्पश्चात जयपुर (1728), उज्जैन (1734), वाराणसी (1737) तथा मथुरा (1738) में ऐसी ही वेधशालाओं का निर्माण करवाया गया।

इन सभी वेधशालाओं में से जयपुर की वेधशाला सबसे बड़ी एवं महत्त्वपूर्ण है। खुले आकाश तले स्थापित इस वेधशाला का लोक प्रचलित नाम जन्तर – मन्तर है। इसकी महत्ता को देखते हुए यूनेस्को ने 2010 ई. में इसे विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किया है। यह भारत का 28वां स्मारक है जो इस सूची में शामिल है। वेधशाला के यंत्र मूलतः पत्थर से निर्मित हैं जिनमें लकडी, चूना एवं धातु का भी प्रयोग हुआ है। यंत्रों के माध्यम से मौसम, स्थानीय समय, ग्रह – नक्षत्र तथा आकाशीय घटनाओं की गणना की जाती है।

इन यंत्रों की महत्ता इसी बात में है कि आज इतने वर्षों बाद भी मौसमी तथा ज्योतिषशास्त्रीय गणनाओं में ये खरे उतरते हैं। इनके आधार पर वर्तमान में भी जयपुर के पंचांग का निर्माण होता है और आज भी आषाढ़ पूर्णिमा पर यहाँ वायु परीक्षण करके प्रतिवर्ष वर्षा के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जाती है। जन्तर – मन्तर के कुछ महत्त्वपूर्ण यन्त्र निम्नलिखित प्रकार से है–

सम्राट यन्त्र

यह वेधशाला का सबसे बडा एवं ऊँचा यन्त्र है। इसकी चोटी आकाशीय ध्रुव को इंगित करती है। इसकी सीढ़ियों के दोनों ओर की दीवारों के बाहरी किनारे पृथ्वी की धुरी के समानान्तर है। इस यन्त्र से समय का ज्ञान होता है।

लघु सम्राट यन्त्र

इसे छोटी धूपघड़ी भी कहा जाता है। सौर समय ज्ञात करने के लिए इसका उपयोग होता है। यन्त्र से 20 सेकन्ड तक की शुद्धता तक समय ज्ञात किया जा सकता है।

राजयन्त्र

ग्रह नक्षत्रों की उच्चता मापने वाला यन्त्र है जिसका उपयोग साल में एक बार हिन्दू पंचांग की गणनाओं के लिए किया जाता है। यन्त्र में एक दूरबीन लगा है जिसके द्वारा समय विशेष में ग्रहों को देखा जा सकता है। जयपुर के स्थानीय पंचांग निर्धारण में राजयन्त्र का उपयोग होता है।

ध्रुव यन्त्र

रात्रि में ध्रुवतारे की स्थिति को जानने के लिए यह यन्त्र सहायक है अतः इसे ध्रुव यन्त्र कहा जाता है। 12 राशियों की गणना के लिए भी इस यन्त्र का उपयोग होता है। इसके द्वारा समय को मनुष्य की श्वास से मापा जाता है जैसेः 4 श्वास त्र 1 पल (24 सेकण्ड), 60 पल त्र 1 गति (24 मिनट), 60 गति त्र 1 दिन (24 घन्टे)।

जयप्रकाश यन्त्र

यह राजा जयसिंह द्वारा निर्मित करवाया गया नवीन यन्त्र था। यन्त्र में दो अर्द्ध गोले हैं जो आकाशीय गोले के आधे – आधे भाग के परिचायक है। इससे बने छोटे–छोटे चिन्ह अक्षांश, दिगंश, उन्नतांश, रेखांश के बारे में बताते हैं। सूर्य की गति को जानने एवं ग्रह – नक्षत्रों की स्थिति के पर्यवेक्षण के लिए जयप्रकाश यन्त्र का उपयोग होता है। वेधशाला के अन्य यन्त्रों की निगरानी भी इस यन्त्र द्वारा सम्भव है।

रामयन्त्र

यह वृत्ताकार दीवारों से निर्मित है। इस यंत्र से उन्नतांश और दिगंश पढ़े जाते हैं और नक्षत्रों का अवलोकन किया जाता है। जयसिंह ने नक्षत्रों की नई तालिका ''जीज ए मुहम्मदशाही'' इसी यन्त्र की सहायता से बनावाई थी। यन्त्र के केन्द्र में लगे स्तम्भ की छाया से दिन का स्थानीय समय ज्ञात होता है।

राशिवलय यन्त्र

इस यन्त्र से बारह राशियों को दर्शाने के लिए बारह सूर्य घड़ियाँ है। जन्म कुन्डलियाँ बनाने में इस यन्त्र का उपयोग होता है।

सूर्यपथ परिक्रमादर्शक यन्त्र

इस लघु यंत्र का उपयोग खगोलीय पिण्ड़ो की अक्षांश एवं देशान्तर रेखायें मापने के लिए किया जााता है।

दिगंशयन्त्र, चक्र यन्त्र, कपालियन्त्र, नाड़ीवलय यन्त्र, उन्नतांश यन्त्र आदि जन्तर–मन्तर के अन्य दर्शनीय यन्त्र हैं जिनसे दिशा, समय, नक्षत्रों की दूरी, ऊँचाई आदि का ज्ञान होता है। वेधशाला में इन यन्त्रों को स्थापित करने से पहले इनके लघु प्रारूप तैयार किये गये थे जिन्हें यन्त्रशाला के संग्रहालय में रखा गया था।

निष्कर्ष

वर्तमान में प्राचीन जयपुर शहर (चारदीवारी) को भी यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल करने की कवायद की जा रही है जो न केवल प्रदेश अपितु भारत वर्ष के लिए गर्व का विषय है। यूनेस्को द्वारा इसे विरासत सूची में सम्मिलित कर लेने पर यह भारत का 38 वाँ स्थल होगा जो इस सूची में शामिल किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *रमाकान्त पाण्डेय, सम्पादक व अनुवादक:, ईश्वरविलास महाकाव्य, जगदीष संस्कृत पुस्तकालय जयपुर, 2006, पृ.4*
2. *रमाकान्त पाण्डेय, सम्पादक व अनुवादक:, ईश्वरविलास महाकाव्य, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुर, 2006, पृ.45*
3. *राघवेन्द्र सिंह मनोहर, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2006, पृ.95*
4. *मोहनलाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2015पृ.122,*
5. *जगदीश सिंह गहलोत, कछवाहों का इतिहास, पृ. 44, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।*
6. *मोहन लाल गुप्ता, जयपुर सम्भाग का जिलेंवार ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.68*
7. *मोहन लाल गुप्ता, जयपुर सम्भाग का जिलेंवार ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.69* के

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

Distributed by **Subscription/Declaration Form for the Publication of Paper in Journals/Magazine**

Social Research Foundation
Committed for quality education
128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011
Contact : 0512-2600745, 9335332333, 9839074762
E-mail : socialresearchfoundationkanpur@gmail.com * Website : www.socialresearchfoundation.com

Personal Details

1. Author .....
Designation :.....
Department :.....
College Website:.....
Residential Address (where journal to be post)
.....
.....
City.....Pin.....Country.....
Phone.....Mobile.....
E-mail:.....
2. Co-author .....
Phone :.....
Email .....
3. Co-author .....
Phone :.....
Email .....

Signature Date Introduced by

Payment Details (Any type of payment is not refundable)

I wish to **subscribe** ☐ **renew my subscription** ☐
Publish **a paper/article** ☐ Seminar/Workshop ☐
Others (Please Mention).....

Mode of Payment

BankDraft/Cheque No.....Date.....
for Rs.....drawn on.....
in favour of **"SRINKHLA EK SHODA"** payable at Kanpur.

If on-line pay (Transaction ID/UTR).....
transfer in **State Bank of India, Usmanpur, Kanpur (03752)**
Account No. 35204660434, IFS Code : SBIN0003752
in favour of **"INNOVATION THE RESEARCH CONCEPT"**

If on-line pay (Transaction ID/UTR).....
transfer in **Indian Bank, Saket Nagar, Kanpur (01628)**
Account No. 6606294002, IFS Code : IDIB000S150
in favour of **"SOCIAL RESEARCH FOUNDAION KANPUR"**

If on-line pay (Transaction ID/UTR).....
transfer in **Indian Bank, Saket Nagar, Kanpur (01628)**
Account No. 933846442, IFS Code : IDIB000S150
Pl. add **Rs. 100/- as BANK CHARGES,** if ourstanding cheques

Declaration Form by the Author(s) (Please read it carefully)

Photo of Author **1. Author** | Photo of Co-author **2. Co-author** | Photo of Co-author **3. Co-author**

I, hereby, declare that this paper/article /matter titled.....
.....
.....
and other information given in this form are true and original. Also, it is declared that above paper/article is not copied or not under review for another publication and not yet published anywhere and the above paper is within 4500 to 5000 words. The opinions and statements published are the responsibilities of mine/us and not policies overviews of the editor. **Publisher are fully authorize to publish my/our paper/article in any of the publication (**book journals/ magazines/ news paper/ articles**) according to the quality of the paper / language / review process of their policies.**

Also, it is in my knowledge that for publication, all rights reserved by Publisher, no part of their publication may be reproduced, stored in a retrieval system, used in a spreadsheet, or transmitted in any means- electronic, mechanical, photocopying or otherwise without prior permission in writing. The articles/papers originally published in other magazines / journals are reprinted with permission Publisher holds the copyright of the selection, sequence, introduction material, value addition, questions at the end and illustration.

The views expressed in these publications are purely personal judgements of the author(s) and do not reflect the views of the institute or the organizations with which they are associated.

All efforts are made to ensure that the published information is correct. The "Social Research Foundation"/publisher is not responsible for any error caused due to oversight or otherwise.

The publisher is not responsible for any discrepancy / inaccuracy in the paper / material / data provided by the Author(s). In case of any nuisance, the author(s) will be responsible for the inaccuracy / discrepancy and any type of claim.

All disputes will be subject to Kanpur Jurisdiction only.

....
Signature of Author **Signature of Co-authors**

Please note that if any matter found copied from any sources, fee will not be refunded and against such author(s) legal action may be taken under copy right act by competent authorities.